

Qo- कौसवहो काव्य के रचनात्मक रामपाणिवाद का जीवन काल का समय प्रस्तुत करें।

Ans- कौसवहो काव्य के रचनात्मक रामपाणिवाद मलावर प्रदेश के लेखित ग्रन्थ माने जाते हैं। इनका लगभग 1800 प्रतिलिपि का समय प्रसिद्ध था। इनका रचनात्मक काल 1700-1750 के बीच माना जाता है। कवि साहित्य और नृत्य कला की श्रमण से सुपरिचित थे।

कवि का जन्म - कवि का जन्म ई.स. 1707 के लगभग दक्षिण मलावर के एक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में उसने अपने पिता की शिक्षा प्राप्त की थी। अनन्तर उस समय एक प्रसिद्ध विद्वान गोरामणिक के काव्य साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। विद्वान कवि होने के अनन्तर ही उत्तर मलावर के कोलतीर राजा के आश्रय में चले गये। राजा उन दिनों अपने पड़ोसी राजा से युद्ध करने में उत्सुक हुआ था। अतएव कवि की कोस निरक्षरता न दे सका। राजा की इस उदात्तता को सुके कुंभकर्तृ मानसिक क्लेश हुआ जिसका वर्णन निम्नलिखित पद्य में किया है -

कौलनृपस्य नगरे वासरा हरिवासराम।

मन्त्रिः मत्कुण्डिकापि रोषयः शिवरात्रयः ॥

अर्थ - कौल नरुप के नगर में मेरे यानी दिन उपवास में बीते थे और रात्रि में मन्त्रियों तथा शिवरात्रि के कारण शिवरात्रि के समान जागरण करने हुए व्यतीत होती थी।

राज्य को नष्ट करने के उद्योग राजा वीरराय कोनीन के एक बालक के लिये रचियेगा -

चैम्पक केसरी के राजा देवनारायण, वीर राय वीरभद्रादिवर्य स्वकान्ति, तिरुमाल आदि राजाओं के आश्रय में रहे। इनकी मृत्यु संभवतः पणाल काल के काल में ई.स. 1775 के लगभग हुई थी।

कवि आपत्तिका ब्रह्मचारी रहे।

संस्कृत, प्राकृत और मलयालम इन तीनों भाषाओं में उनके अमान रूप से रचनाओं का प्रणयन किया है।

कवि का स्वभाव - संस्कृत में इनके चार नाटक तीन काव्य और पौन्य स्तोत्र अन्तर्गु उपलब्ध हैं। इनके दो टीका अन्तर्गु भी मिले हैं।

अलक्ष्मण मलयालम में इनकी बहुत सी रचनाएँ हैं जिनमें - कृष्ण चरित, शिशु राय, पुन्यत्नय स्तं कृष्णार्जुन चरित विख्यात हैं।

प्रीति नासा का कवि महान् पंडित हैं इनके चरित के प्राकृत प्रकाश पर 'प्राकृतवृत्ति' नामक टीका लिखी है तथा दो खण्ड काव्य और चैम्पक स्तोत्र उर्ध्वानुरूप अतः कौसवहो कवि का अन्तः-उपलब्ध महान् मलयालम रहा है - जो अक्षर अन्तर्गु में अपना अन्तः चलिता है।

Qo- कौसवहो काव्य के रचनाया रामपाणिवाक का जीवन काल का समय प्रस्तुत करे।

Ans- कौसवहो काव्य के रचनाया- रामपाणिवाक मलावर प्रदेश के ललितग्राम जाति के थे। इनका लगभग 100 प्रबंधों के समय प्रसन्न या मुदद कवियों का था। यही श्रमार्थिन पाणिवाक नामक जाति के कवि साहित्य और नृत्य कला की श्रमणा से सुपरिचित था।

कवि का जन्म - कवि का जन्म ई० स० 1707 के लगभग दक्षिण मलावर के एक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में उसने अपने पिता ही शिक्षा प्राप्त की थी। अनन्तर उस समय एक प्रसिद्ध विद्वान गोरामण्डल के काव्य साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। विद्वान कवि होने के अनन्तर यह उत्तर मलावर के कोलतीर राजा के आश्रय में गले गये। राजा उन दिनों अपने पड़ोसी राजा से युद्ध करने में उत्सुक हुआ था। अतएव कवि की कोस निजोषण्यम न के सन्का। राजा की इस उदात्तता को सुके कुंफर्तमानसिक बलेशुद्धता विस्तृत वर्णन निम्नलिखित पद्य में दिपाई है -

कौलनृपस्य नगरे वासरा हरिवासराम।

मन्त्रिकः मत्कुणिकापि रोग्यः शिवरात्रयः ॥

श्रमार्थिन- कौल नरुण के नगर में मेरे यानी दिन उपवास में बीते थे और रात्रियों मन्त्रिकों तथा श्वटमलों के द्वारा शिवरात्रि के समान जागरण करने हुए व्यतीत होती थी।

यहाँ को-मलावर से श्रमार्थिन राजा वीरराय को-नीन के एक बालक के लिये श्रमणाई -

चैम्पक कैसरी के राजा देवनारायण, वीर राय वीरभद्रादिवर्य स्वक कविक निम्नलिखित आदि राजाओं के आश्रय में रहे। इनकी मृत्यु संभवतः पणाल काल के काल में ई० स० 1775 के लगभग हुई थी।

कवि आपत्तिका ब्रह्मचारी रहे।

संस्कृत, प्राकृत और मलयालम इन तीनों भाषाओं में उनके समान रूप से रचनाओं का प्रणयन किया है।

कवि का रचना - संस्कृत में इनके चार नाटक तीन काव्य और पौन्य स्तोत्र अन्तर्गत उपलब्ध हैं। इनके दो टीका अन्तर्गत भी मिले हैं।

मलयालम मलयालम में इनकी बहुत सी रचनाएँ हैं जिनमें - कृष्ण चरित, शिखंड राय, पुन्यत्थरुत्त कव्यमंगल-वर्ति विख्यात हैं।

प्राकृत भाषा का कवि महान् परिदत्त हैं। इनके वर्णन के प्राकृत पद्यों पर 'प्राकृतवृत्ति' नामक टीका लिखी है तथा 'दो खण्ड काव्य' और 'वैकुण्ठ' उपाख्यान रूप में अनेक कविका संगी-उपलब्ध महान् मत्वपूर्वक रहे हैं - जो अनेक अन्तर्गत में अपना अन्तर्गत हैं।

दो खण्ड काव्य - वैकुण्ठ उपाख्यान रूप में अनेक कविका संगी-उपलब्ध महान् मत्वपूर्वक रहे हैं - जो अनेक अन्तर्गत में अपना अन्तर्गत हैं।